

SKPF-Wincompete Test Series 2026

Test 15 -संघीय सरकार और आयोग

[ANSWER KEY SECTION]

प्रश्न संख्या	सही विकल्प	प्रश्न संख्या	सही विकल्प
1	B	11	B
2	C	12	C
3	A	13	B
4	B	14	B
5	B	15	C
6	C	16	B
7	C	17	A
8	A	18	B
9	B	19	D
10	A	20	B

प्रश्न संख्या	सही विकल्प	प्रश्न संख्या	सही विकल्प
21	B	31	B
22	C	32	D
23	D	33	C
24	A	34	B
25	C	35	A
26	A	36	B
27	C	37	C
28	A	38	A
29	D	39	B
30	B	40	B

प्रश्न संख्या	सही विकल्प	प्रश्न संख्या	सही विकल्प
41	B	51	A
42	D	52	C
43	A	53	C
44	A	54	A
45	C	55	C
46	A	56	C
47	B	57	A
48	C	58	B
49	D	59	B
50	A	60	C

wincompete

प्रश्न संख्या	सही विकल्प	प्रश्न संख्या	सही विकल्प
61	B	71	A
62	D	72	A
63	A	73	D
64	A	74	A
65	D	75	A
66	A	76	C
67	B	77	A
68	D	78	A
69	C	79	C
70	A	80	A

wincompete

प्रश्न संख्या	सही विकल्प	प्रश्न संख्या	सही विकल्प
81	B	91	D
82	C	92	C
83	C	93	A
84	A	94	A
85	B	95	C
86	A	96	C
87	A	97	A
88	B	98	B
89	B	99	B
90	A	100	B

wincompete

SKPF-Wincompete Test Series 2026

Test 13 -राजस्थान भूगोल (संसाधन)

[DETAILED EXPLANATIONS]

प्रश्न: 1

सही उत्तर: B

व्याख्या: राष्ट्रपति के निर्वाचन में संसद के दोनों सदनों के निर्वाचित सदस्य तथा राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों की विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य भाग लेते हैं। संसद के मनोनीत सदस्य और विधानसभाओं के मनोनीत या विधान परिषदों के सदस्य इसमें भाग नहीं लेते हैं। महाभियोग प्रस्ताव संसद के किसी भी सदन में लाया जा सकता है और इसके लिए सदन की कुल सदस्य संख्या का दो-तिहाई बहुमत आवश्यक होता है। राष्ट्रपति का पद भारतीय संविधान में आयरलैंड से प्रेरित है।

प्रश्न: 2

सही उत्तर: C

व्याख्या: राष्ट्रपति द्वारा अनुच्छेद 123 के तहत जारी अध्यादेश की शक्ति संसद के कानून के समान होती है। यह संसद के पुनः समवेत होने पर 6 सप्ताह के भीतर अनुमोदित होना चाहिए। अध्यादेश निर्माण की शक्ति राष्ट्रपति की स्वविवेकिय शक्ति नहीं है, बल्कि यह केंद्रीय मंत्रिपरिषद की सलाह पर आधारित होती है। सर्वोच्च न्यायालय ने कोपर मामले में स्पष्ट किया था कि अध्यादेश निर्माण की न्यायिक समीक्षा की जा सकती है।

प्रश्न: 3

सही उत्तर: A

व्याख्या: अनुच्छेद 72 के तहत राष्ट्रपति की क्षमादान शक्ति राज्यपाल की तुलना में अधिक व्यापक होती है क्योंकि राष्ट्रपति सैन्य न्यायालय (कोर्ट मार्शल) के दंड को भी माफ कर सकता है और मृत्युदंड पर अंतिम निर्णय ले सकता है, जबकि राज्यपाल को यह अधिकार नहीं है। राष्ट्रपति इस शक्ति का प्रयोग मंत्रिपरिषद की सलाह के अनुसार करता है, हालांकि दया याचिकाओं पर निर्णय के दौरान गृह मंत्रालय की अनुशंसा मुख्य होती है।

प्रश्न: 4

सही उत्तर: B

व्याख्या: भारतीय संविधान के अनुच्छेद 75(1) के अंतर्गत प्रधानमंत्री की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है और अन्य मंत्रियों की नियुक्ति प्रधानमंत्री की सलाह पर होती है। अनुच्छेद 78 प्रधानमंत्री के संवैधानिक कर्तव्यों को परिभाषित करता है जिसके तहत वह संघ के प्रशासन की जानकारी राष्ट्रपति को देता है। अनुच्छेद 74(1) राष्ट्रपति को सहायता और सलाह देने के लिए मंत्रिपरिषद का प्रावधान करता है, और अनुच्छेद 75(3) सामूहिक उत्तरदायित्व सुनिश्चित करता है।

प्रश्न: 5

सही उत्तर: B

व्याख्या: 91वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2003 के अनुसार राज्य मंत्रिपरिषद में मुख्यमंत्री सहित मंत्रियों की कुल संख्या उस राज्य की विधानसभा के सदस्यों की कुल संख्या के 15 प्रतिशत से अधिक नहीं हो सकती है, न कि कम नहीं होगी। साथ ही, किसी भी राज्य में मंत्रियों की न्यूनतम संख्या (मुख्यमंत्री सहित) 12 से कम नहीं होनी चाहिए। यह प्रावधान राज्यों में बड़े मंत्रिपरिषद के आकार को नियंत्रित करने के लिए किया गया था।

प्रश्न: 6

सही उत्तर: C

व्याख्या: अनुच्छेद 78 प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के बीच एक महत्वपूर्ण वैधानिक और प्रशासनिक संवाद कड़ी है। इसके माध्यम से राष्ट्रपति को देश के शासन-प्रशासन और विधायी मामलों की आधिकारिक जानकारी प्राप्त है।

होती है। यह प्रावधान उत्तरदायी शासन प्रणाली को मजबूत करता है। प्रधानमंत्री राष्ट्रपति द्वारा मांगे जाने पर प्रशासनिक मामलों की फाइलें व दस्तावेज प्रस्तुत करने के लिए संवैधानिक रूप से बाध्य माने जाते हैं।

प्रश्न: 7

सही उत्तर: C

व्याख्या: राष्ट्रपति के निर्वाचन में अपनाई जाने वाली आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली और एकल संक्रमणीय मत पद्धति में मतदाता उम्मीदवारों को उनकी प्राथमिकता के आधार पर वरीयता (1, 2, 3...) देता है। इसमें साधारण बहुमत नहीं बल्कि न्यूनतम कोटा प्राप्त करना अनिवार्य होता है। मतों का मूल्य निकालने के लिए राज्य की जनसंख्या और निर्वाचित विधायकों की संख्या का एक विशेष संवैधानिक सूत्र प्रयोग किया जाता है।

प्रश्न: 8

सही उत्तर: A

व्याख्या: राष्ट्रपति द्वारा जारी अध्यादेश की प्रभावशीलता संसद द्वारा पारित अधिनियम के समान होती है। यह केवल उन्हीं विषयों पर आ सकता है जिन पर संसद विधि बना सकती है। राष्ट्रपति अपनी इच्छा या स्वविवेक से अध्यादेश वापस नहीं ले सकता, इसके लिए भी केंद्रीय मंत्रिपरिषद की विधिवत सलाह और अनुशंसा अनिवार्य होती है। अध्यादेश केवल तभी लाया जा सकता है जब संसद का सत्र न चल रहा हो।

प्रश्न: 9

सही उत्तर: B

व्याख्या: वर्ष 1986 में तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जेल सिंह ने डाकघर संशोधन विधेयक पर अपनी वीटो शक्ति का प्रयोग करते हुए न तो अनुमति दी और न ही लौटाया, जिसे पॉकेट वीटो कहा गया। संविधान में राष्ट्रपति के लिए विधेयक पर निर्णय लेने की कोई निश्चित समयासीमा तय नहीं है। दोनों कथन सत्य हैं परंतु कारण, अभिकथन की प्रत्यक्ष व्याख्या नहीं करता क्योंकि समय-सीमा का अभाव पॉकेट वीटो का कारण मात्र है न कि विशिष्ट घटना का स्पष्टीकरण।

प्रश्न: 10

सही उत्तर: A

व्याख्या: प्रधानमंत्री सरकार का मुख्य धुरी होता है। यदि प्रधानमंत्री पद से त्यागपत्र दे देता है या उसका निधन हो जाता है, तो संपूर्ण मंत्रिपरिषद स्वतः विघटित हो जाती है क्योंकि अन्य मंत्रियों का अस्तित्व प्रधानमंत्री के नेतृत्व पर ही निर्भर करता है। राष्ट्रपति किसी भी मंत्री को अपनी इच्छा से नहीं बल्कि केवल प्रधानमंत्री की लिखित सलाह पर ही बर्खास्त कर सकता है। अतः केवल निष्कर्ष प्रथम सत्य है।

प्रश्न: 11

सही उत्तर: B

व्याख्या: केंद्रीय मंत्रिपरिषद में विभिन्न श्रेणियां होती हैं। कैबिनेट मंत्री महत्वपूर्ण मंत्रालयों के प्रमुख होते हैं और नीति निर्धारण में प्रत्यक्ष भाग लेते हैं। राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) अपने विभाग के प्रभारी होते हैं और कैबिनेट बैठकों में विशेष रूप से आमंत्रित होने पर आते हैं। राज्य मंत्री और उपमंत्री क्रमशः कैबिनेट मंत्रियों के अधीन रहकर प्रशासनिक और संसदीय कार्यों में सहायता प्रदान करते हैं, नीति निर्माण में उनका सीधा नियंत्रण नहीं होता।

प्रश्न: 12

सही उत्तर: C

व्याख्या: राष्ट्रपति पर महाभियोग भारतीय संविधान के अनुच्छेद 61 के तहत लगाया जाता है। इसके लिए प्रस्ताव लाने हेतु एक-चौथाई सदस्यों के हस्ताक्षर चाहिए होते हैं। प्रस्ताव को पारित करने के लिए संसद के प्रत्येक सदन की कुल सदस्य संख्या का कम से कम दो-तिहाई बहुमत आवश्यक होता है, न कि तीन-तिहाई। महाभियोग एक अर्ध-न्यायिक प्रक्रिया है जिसमें संसद के मनोनीत सदस्य भाग लेते हैं लेकिन राज्य विधानसभाओं के सदस्य भाग नहीं लेते।

प्रश्न: 13

सही उत्तर: B

व्याख्या: 44वें संविधान संशोधन 1978 के पश्चात राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा केवल तभी की जा सकती है जब केंद्रीय मंत्रिमंडल (Cabinet) अपनी लिखित अनुशंसा राष्ट्रपति को प्रेषित करे। मूल संविधान में 'आंतरिक अशांति' शब्द था जिसे बदलकर 'सशस्त्र विद्रोह' किया गया। आपातकाल की न्यायिक समीक्षा की जा सकती है और लोकसभा का कार्यकाल एक बार में केवल एक वर्ष के लिए बढ़ाया जा सकता है।

प्रश्न: 14

सही उत्तर: B

व्याख्या: निलंबनकारी वीटो का तात्पर्य यह है कि राष्ट्रपति संसद द्वारा पारित किसी साधारण विधेयक को अपने पास रोकने के बजाय उसे पुनर्विचार के लिए संसद के पास वापस भेज देता है। यदि संसद उस विधेयक को बिना किसी संशोधन के या संशोधन के साथ दोबारा पारित कर राष्ट्रपति के पास भेजती है, तो राष्ट्रपति उस पर हस्ताक्षर करने के लिए संवैधानिक रूप से बाध्य हो जाता है। यह वीटो धन विधेयकों पर लागू नहीं होता।

प्रश्न: 15

सही उत्तर: C

व्याख्या: राष्ट्रपति शासन (अनुच्छेद 356) की घोषणा का संसद के दोनों सदनों द्वारा दो महीनों के भीतर अनुमोदन होना अनिवार्य है। वित्तीय आपातकाल (अनुच्छेद 360) का भी दो महीनों के भीतर संसद से अनुमोदन आवश्यक है, अन्यथा वह समाप्त हो जाता है। 44वें संविधान संशोधन के अनुसार राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान अनुच्छेद 20 (अपराधों के दोषसिद्धि के संबंध में संरक्षण) और अनुच्छेद 21 (प्राण और दैहिक स्वतंत्रता) को किसी भी स्थिति में निलंबित नहीं किया जा सकता।

प्रश्न: 16

सही उत्तर: B

व्याख्या: प्रधानमंत्री मंत्रिपरिषद का केंद्र बिंदु होता है और उसके त्यागपत्र से पूरी मंत्रिपरिषद भंग हो जाती है क्योंकि सरकार का नेतृत्व उसी के हाथ में होता है। दूसरी ओर, प्रधानमंत्री और अन्य मंत्रियों की नियुक्ति की प्रक्रिया अनुच्छेद 75 के तहत राष्ट्रपति द्वारा संपन्न की जाती है। दोनों कथन संवैधानिक रूप से पूर्ण सत्य हैं, परंतु कारण कथन की प्रत्यक्ष व्याख्या या परिणाम का तार्किक आधार स्पष्ट नहीं करता है।

प्रश्न: 17

सही उत्तर: A

व्याख्या: 91वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2003 के माध्यम से दलबदल विरोधी कानून को कड़ा किया गया। इसके तहत दलबदल के आधार पर अयोग्य ठहराए जाने वाला संसद या विधानमंडल का सदस्य मंत्री बनने के लिए भी अपात्र हो जाता है जब तक वह पुनः निर्वाचित न हो। मंत्रियों की न्यूनतम संख्या छोटे राज्यों के लिए 12 निर्धारित की गई है, न कि 15। अतः केवल प्रथम निष्कर्ष ही सत्य है।

प्रश्न: 18

सही उत्तर: B

व्याख्या: अनुच्छेद 72 के अंतर्गत राष्ट्रपति की क्षमादान शक्तियों में क्षमा (Pardon) का अर्थ दोषी को सभी दंडों से पूर्णतः मुक्त करना है। प्रविलंबन (Reprieve) का अर्थ किसी दंड को कुछ समय के लिए टालना है। परिहार (Remission) का अर्थ दंड की प्रकृति को बदले बिना उसकी अवधि को कम करना है। विराम (Respite) का अर्थ विशेष शारीरिक या चिकित्सीय परिस्थितियों के कारण मूल दंड से कम सजा देना है।

प्रश्न: 19

सही उत्तर: D

व्याख्या: भारत का राष्ट्रपति कार्यपालिका का औपचारिक प्रमुख होता है और संघ की सभी शक्तियां उसमें निहित होती हैं। वह महान्यायवादी, सीएजी और राज्यपालों की नियुक्ति करता है। राष्ट्रपति अपने अधिकारों का प्रयोग संविधान के अनुरूप स्वयं या अधीनस्थों के माध्यम से करता है। परंतु राष्ट्रपति को लोकसभा में बहुमत

प्राप्त प्रधानमंत्री को अपनी स्वेच्छा से बर्खास्त करने का कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि मंत्रिपरिषद लोकसभा के प्रति सामूहिक रूप से उत्तरदायी होती है।

प्रश्न: 20

सही उत्तर: B

व्याख्या: भारतीय संविधान के तहत संसद के दो सत्रों के बीच अधिकतम अंतराल 6 महीने से अधिक नहीं हो सकता है। यदि संसद सत्र में न हो और अध्यादेश जारी किया जाए, तो सत्र शुरू होने के बाद उसे पारित करने के लिए 6 सप्ताह का समय मिलता है। इस प्रकार, एक अध्यादेश की अधिकतम संभव कानूनी जीवन अवधि लगभग 6 महीने और 6 सप्ताह तक हो सकती है यदि उसका अनुमोदन न किया जाए।

प्रश्न: 21

सही उत्तर: B

व्याख्या: मंत्रिमंडलीय समितियां संविधान में उल्लिखित नहीं हैं, इसलिए इन्हें संविधानेतर निकाय कहा जाता है, जिनका गठन कार्य नियमों के तहत किया जाता है। अधिकांश महत्वपूर्ण समितियों के अध्यक्ष प्रधानमंत्री होते हैं, किंतु सभी समितियों के अनिवार्य रूप से प्रधानमंत्री ही अध्यक्ष हों, ऐसा आवश्यक नहीं है (उदाहरणार्थ, कुछ समितियों की अध्यक्षता गृह मंत्री भी करते हैं)। कैबिनेट सचिवालय प्रधानमंत्री के अधीन होता है और इसका प्रशासनिक प्रमुख कैबिनेट सचिव होता है।

प्रश्न: 22

सही उत्तर: C

व्याख्या: 84वें संविधान संशोधन अधिनियम (2001) द्वारा वर्ष 2026 तक के लिए लोकसभा और विधानसभा सीटों की कुल संख्या और उनके क्षेत्रीय निर्वाचन क्षेत्रों के पुनर्निर्धारण पर रोक लगाई गई है ताकि राज्य जनसंख्या नियंत्रण के लिए उठाए गए कदमों के प्रति हतोत्साहित न हों। यह रोक जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के लिए राज्यों को प्रोत्साहित करने हेतु थी, न कि परिवार नियोजन कार्यक्रमों के समान क्रियान्वयन हेतु। अतः कथन सत्य है किंतु कारण गलत है।

प्रश्न: 23

सही उत्तर: D

व्याख्या: लोकसभा की सभापति तालिका (Panel of Chairpersons) के सदस्यों को अध्यक्ष द्वारा नामित किया जाता है, किंतु वे स्थायी अध्यक्ष या उपाध्यक्ष के रूप में तब कार्य नहीं कर सकते जब वह पद रिक्त हो; पद रिक्त होने पर नए अध्यक्ष का चुनाव किया जाता है। तालिका के सदस्य केवल अध्यक्ष या उपाध्यक्ष दोनों की अनुपस्थिति में सदन की बैठक की अध्यक्षता करते हैं। अतः दोनों निष्कर्ष असत्य हैं।

प्रश्न: 24

सही उत्तर: A

व्याख्या: संसद की कार्यप्रणाली में प्रश्नकाल बैठक का पहला घंटा होता है जिसमें सदस्य मंत्रियों से प्रश्न पूछते हैं। शून्यकाल प्रश्नकाल के तुरंत बाद (लगभग 12 बजे) शुरू होता है जिसमें बिना पूर्व सूचना के राष्ट्रीय महत्व के मामले उठाए जाते हैं। ध्यानकर्षण प्रस्ताव के माध्यम से किसी अति आवश्यक सार्वजनिक मामले पर मंत्री का ध्यान खींचा जाता है। कार्यस्थगन प्रस्ताव का उद्देश्य देश के किसी तात्कालिक गंभीर मामले पर सदन की सामान्य कार्यवाही रोकना है।

प्रश्न: 25

सही उत्तर: C

व्याख्या: धन विधेयक केवल लोकसभा में पुनः स्थापित किया जा सकता है और इसके लिए राष्ट्रपति की पूर्व अनुमति आवश्यक होती है। इसके धन विधेयक होने पर लोकसभा अध्यक्ष का निर्णय अंतिम होता है। राज्यसभा धन विधेयक को संशोधित नहीं कर सकती है, वह केवल अपनी अनुशंसाएं भेज सकती है और इस विधेयक को अधिकतम 14 दिनों तक ही रोक सकती है, 30 दिनों तक नहीं। अतः विकल्प C असत्य है और यही सही उत्तर है।

प्रश्न: 26

सही उत्तर: A

व्याख्या: कैबिनेट सचिवालय भारत सरकार के सिविल प्रशासन का सर्वोच्च निकाय है। कैबिनेट सचिव देश का सर्वोच्च सिविल सेवक होता है और वह प्रशासनिक अधिकारियों के चयन, पदस्थापन तथा सिविल सेवा बोर्ड (Civil Services Board) का पदेन अध्यक्ष होता है। यह सचिवालय प्रधानमंत्री के प्रत्यक्ष निर्देशन में कार्य करता है और मंत्रालयों के बीच नीतिगत निर्णयों में प्रशासनिक समन्वय स्थापित करने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रश्न: 27

सही उत्तर: C

व्याख्या: राज्यसभा एक स्थायी सदन है जिसका कभी विघटन नहीं होता है और इसके एक-तिहाई सदस्य प्रत्येक दो वर्ष पर सेवानिवृत्त होते हैं। राज्यसभा के सदस्यों का कार्यकाल 5 वर्ष का नहीं बल्कि 6 वर्ष का होता है। भारत के उपराष्ट्रपति पदेन रूप से राज्यसभा के सभापति के रूप में कार्य करते हैं। अतः विकल्प C तथ्यात्मक रूप से असत्य होने के कारण सही उत्तर है।

प्रश्न: 28

सही उत्तर: A

व्याख्या: अनुच्छेद 110 के तहत किसी विधेयक को धन विधेयक के रूप में प्रमाणित करने का अंतिम अधिकार लोकसभा अध्यक्ष के पास होता है। लोकसभा अध्यक्ष अपने पद की अलग से कोई शपथ नहीं लेता, वह केवल लोकसभा सदस्य के रूप में शपथ लेता है। दल-बदल के आधार पर लोकसभा सदस्यों की अयोग्यता का निर्णय निर्वाचन आयोग की सलाह पर नहीं, बल्कि स्वयं लोकसभा अध्यक्ष द्वारा किया जाता है। अतः कथन I और II सत्य हैं।

प्रश्न: 29

सही उत्तर: D

व्याख्या: संविधान के अनुच्छेद 108 के तहत बुलाई गई संयुक्त बैठक की अध्यक्षता लोकसभा अध्यक्ष करता है, उसकी अनुपस्थिति में लोकसभा का उपाध्यक्ष और यदि वह भी अनुपस्थित हो तो राज्यसभा का उपसभापति करता है, न कि हमेशा उपाध्यक्ष द्वारा। कारण सत्य है क्योंकि संयुक्त बैठक केवल साधारण और वित्तीय विधेयकों के लिए बुलाई जा सकती है, धन या संविधान संशोधन विधेयकों के लिए नहीं। अतः अभिकथन असत्य और कारण सत्य है।

प्रश्न: 30

सही उत्तर: B

व्याख्या: लोकसभा का विघटन होने पर संसद में लंबित सभी विधेयक (सिवाय उन विधेयकों के जो राज्यसभा में लंबित हैं और लोकसभा द्वारा पारित नहीं हुए हैं) समाप्त हो जाते हैं। इसके विपरीत, संसद के सत्र का केवल 'सत्रावसान' (Prorogation) होने पर सदन की बैठक समाप्त होती है, किंतु लंबित विधेयक या प्रस्ताव समाप्त नहीं होते और वे आगामी सत्र में भी विचारणीय बने रहते हैं। अतः निष्कर्ष II सत्य है।

प्रश्न: 31

सही उत्तर: B

व्याख्या: मंत्रिमंडलीय समितियों में राजनीतिक मामलों की समिति देश की आंतरिक और बाह्य नीति से जुड़े राजनीतिक मुद्दों का निपटारा करती है। नियुक्ति समिति केंद्र सरकार के सर्वोच्च पदों पर नियुक्तियों के मामलों को देखती है। आर्थिक मामलों की समिति देश की आर्थिक और वित्तीय नीतियों का समन्वय करती है। संसदीय कार्य समिति संसद में सरकार के विधायी कार्यों और सत्र के कार्यक्रमों का सुचारू प्रबंधन संभालती है। सही सुमेलित क्रम B है।

प्रश्न: 32

सही उत्तर: D

व्याख्या: 104वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा लोकसभा और विधानसभाओं में आंग्ल-भारतीय सीटों को समाप्त कर दिया गया। गणपूर्ति कुल सदस्यों का दसवां भाग होती है। 84वें संशोधन द्वारा 1971 की जनगणना के आधार पर सीटों के आवंटन को सुरक्षित किया गया है। राज्यसभा में राज्यों के प्रतिनिधियों का निर्वाचन प्रत्यक्ष रूप से मतदाताओं द्वारा नहीं, बल्कि राज्य विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली के तहत अप्रत्यक्ष रूप से होता है। अतः विकल्प D असत्य है।

प्रश्न: 33

सही उत्तर: C

व्याख्या: साधारण विधेयक संसद के किसी भी सदन में लाया जा सकता है और गतिरोध होने पर संयुक्त बैठक बुलाई जाती है जिसकी अध्यक्षता लोकसभा अध्यक्ष करता है। लोकसभा द्वारा पारित साधारण विधेयक को राज्यसभा अधिकतम छह महीने तक रोक सकती है। परंतु धन विधेयक के मामले में राज्यसभा को संयुक्त बैठक बुलाने की कोई शक्ति नहीं है, क्योंकि धन विधेयक पर अंतिम अधिकार लोकसभा का होता है। अतः विकल्प C असत्य है।

प्रश्न: 34

सही उत्तर: B

व्याख्या: लोकसभा की कार्यप्रणाली के नियमों के अनुसार सरकार के विरुद्ध लाए जाने वाले अविश्वास प्रस्ताव को सदन में प्रस्तुत और स्वीकार करने के लिए कम से कम 50 सदस्यों का समर्थन अनिवार्य होता है। यदि 50 सदस्य प्रस्ताव के समर्थन में खड़े होते हैं, तब लोकसभा अध्यक्ष उस पर चर्चा की तिथि निर्धारित करता है। यह प्रस्ताव केवल लोकसभा में ही लाया जा सकता है क्योंकि मंत्रिपरिषद् सामूहिक रूप से लोकसभा के प्रति उत्तरदायी होती है।

प्रश्न: 35

सही उत्तर: A

व्याख्या: वित्त विधेयक (श्रेणी I) को लोकसभा में राष्ट्रपति की पूर्व संस्तुति से प्रस्तुत किया जाता है और राज्यसभा इसे संशोधित या अस्वीकार कर सकती है। अनुच्छेद 110 के अनुसार सभी धन विधेयक वित्त विधेयक होते हैं, लेकिन सभी वित्त विधेयक धन विधेयक नहीं होते। राज्यसभा धन विधेयक में संशोधन की अनुशंसा कर सकती है, किंतु उन अनुशंसाओं को मानना या न मानना लोकसभा पर निर्भर करता है, वह बाध्यकारी नहीं है। अतः कथन I और II सत्य हैं।

प्रश्न: 36

सही उत्तर: B

व्याख्या: लोकसभा अध्यक्ष सदन का पीठासीन अधिकारी होता है और सदन के नियमों की व्याख्या करने तथा शांति बनाए रखने की उसकी सर्वोच्च शक्ति होती है। लोकसभा अध्यक्ष का निर्वाचन लोकसभा के निर्वाचित सदस्य अपने में से ही बहुमत से करते हैं। दोनों कथन भारतीय संसदीय व्यवस्था के संदर्भ में पूर्णतः सत्य हैं, परंतु कारण (निर्वाचन प्रक्रिया), कथन (सदन के संचालन की शक्ति) की प्रत्यक्ष सैद्धांतिक व्याख्या नहीं करता है।

प्रश्न: 37

सही उत्तर: C

व्याख्या: संसद के किसी भी सदन की बैठक के वैध संचालन के लिए कोरम (गणपूर्ति) का होना अनिवार्य है, जो कुल सदस्य संख्या का दसवां हिस्सा होता है। लोकसभा में यह संख्या 55 और राज्यसभा में 25 होती है। यदि गणपूर्ति पूरी नहीं होती है, तो पीठासीन अधिकारी का यह कर्तव्य है कि वह घंटी बजाए या कोरम पूरा होने तक सदन की बैठक को स्थगित कर दे। अतः दोनों निष्कर्ष पूर्णतः सत्य हैं।

प्रश्न: 38

सही उत्तर: A

व्याख्या: स्थगन प्रस्ताव का उद्देश्य किसी तत्काल गंभीर सार्वजनिक मामले पर बहस के लिए सदन की सामान्य कार्यवाही रोकना है। अविश्वास प्रस्ताव सरकार के विरुद्ध बहुमत परीक्षण हेतु लोकसभा में लाया जाता है। विशेषाधिकार प्रस्ताव किसी मंत्री द्वारा सदन में तथ्यों को छिपाने या गलत जानकारी देने पर लाया जाता है। ध्यानाकर्षण प्रस्ताव किसी सार्वजनिक महत्व के मामले पर मंत्री का ध्यान आकर्षित करने के लिए होता है। सही सुमेलित युग्म A है।

प्रश्न: 39

सही उत्तर: B

व्याख्या: शून्यकाल भारतीय संसदीय परंपरा की 1962 से चली आ रही एक अनूठी देन है। राज्यसभा के सभापति या उपसभापति तथा लोकसभा अध्यक्ष के लिए सदन का सदस्य होना अनिवार्य है, जबकि लोकसभा का उपाध्यक्ष भी सदन का सदस्य होता है। यदि किसी सदस्य का कार्यकाल समाप्त हो जाए या वह संसद सदस्य न रहे, तो वह अपने पद पर नहीं बना रह सकता। अतः विकल्प B तथ्यात्मक रूप से असत्य होने के कारण सही उत्तर है।

प्रश्न: 40

सही उत्तर: B

व्याख्या: बजट पारित होने की प्रक्रिया में अनुदान की मांगों पर मतदान केवल लोकसभा में होता है, राज्यसभा को अनुदान मांगों पर मतदान का अधिकार नहीं है। सरकार संचित निधि से बिना विनियोग विधेयक पारित किए एक भी रुपया खर्च नहीं कर सकती। वित्त विधेयक को केवल लोकसभा में ही प्रस्तुत किया जा सकता है, राज्यसभा में नहीं। वित्तीय मामलों में लोकसभा की शक्तियां राज्यसभा की तुलना में अत्यधिक शक्तिशाली और सर्वोच्च होती हैं।

प्रश्न: 41

सही उत्तर: B

व्याख्या: लोक लेखा समिति (PAC) में 22 सदस्य होते हैं (15 लोकसभा और 7 राज्यसभा)। इसके अध्यक्ष की नियुक्ति लोकसभा अध्यक्ष द्वारा की जाती है और 1967 से यह परंपरा है कि इसका अध्यक्ष विपक्ष का नेता होता है। प्राक्कलन समिति सबसे बड़ी समिति है जिसमें 30 सदस्य होते हैं, और इसके सभी सदस्य केवल लोकसभा से चुने जाते हैं, राज्यसभा से नहीं। अतः कथन I और II सत्य हैं जबकि III असत्य है।

प्रश्न: 42

सही उत्तर: D

व्याख्या: संसदीय विशेषाधिकार केवल सत्र के दौरान ही नहीं बल्कि सत्र के बाहर भी कुछ हद तक और सदन की गरिमा से जुड़े रहते हैं। इसके अलावा, अभिकथन असत्य है क्योंकि विशेषाधिकार सत्र समाप्त होने पर भी पूरी तरह समाप्त नहीं होते और सदन को अपनी अवमानना पर दंड देने का अधिकार है। कारण पूरी तरह सत्य है क्योंकि अनुच्छेद 105 के अंतर्गत संसद को विशेषाधिकारों की रक्षा करने की अनन्य शक्ति प्राप्त है।

प्रश्न: 43

सही उत्तर: A

व्याख्या: राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग (NJAC) अधिनियम को उच्चतम न्यायालय ने अपने ऐतिहासिक निर्णय में संविधान के मूल ढांचे और न्यायपालिका की स्वतंत्रता का उल्लंघन मानते हुए असंवैधानिक घोषित कर दिया था। कॉलेजियम प्रणाली मूल संविधान के अनुच्छेद 124 में नहीं थी, बल्कि यह उच्चतम न्यायालय के विभिन्न न्यायाधीश मामलों (Judges Cases) के न्यायिक निर्णयों के माध्यम से विकसित हुई है। अतः केवल निष्कर्ष I सत्य है।

प्रश्न: 44

सही उत्तर: A

व्याख्या: संविधान का अनुच्छेद 131 उच्चतम न्यायालय के मूल एवं आरंभिक क्षेत्राधिकार से संबंधित है जिसमें केंद्र और राज्यों के बीच विवाद आते हैं। अनुच्छेद 136 विशेष अनुमति याचिका (SLP) से संबंधित है। अनुच्छेद

143 राष्ट्रपति की परामर्शदात्री शक्ति से जुड़ा है। अनुच्छेद 124 उच्चतम न्यायालय की स्थापना और गठन का प्रावधान करता है। सही सुमेलित क्रम a-II, b-IV, c-III, d-I है, जो विकल्प A में है।

प्रश्न: 45

सही उत्तर: C

व्याख्या: प्राक्कलन समिति के अध्यक्ष का पद सत्ताधारी दल के किसी सांसद को ही दिया जाता है, न कि विपक्षी दल को, जबकि लोक लेखा समिति का अध्यक्ष विपक्ष से होता है। अन्य सभी कथन पूर्णतः सत्य हैं: लोक लेखा समिति सीएजी की रिपोर्ट जांचती है, सार्वजनिक उपक्रम समिति में 22 सदस्य होते हैं, और दल-बदल मामलों में पीठासीन अधिकारी का निर्णय अंतिम होता है। अतः विकल्प C असत्य होने के कारण सही उत्तर है।

प्रश्न: 46

सही उत्तर: A

व्याख्या: मूल 10वीं अनुसूची में दल-बदल के लिए एक-तिहाई सदस्यों के विलय की अनुमति थी, जिसे 91वें संविधान संशोधन (2003) के द्वारा बढ़ाकर दो-तिहाई कर दिया गया ताकि दल-बदल पर रोक लग सके। पीठासीन अधिकारी के निर्णय की न्यायिक समीक्षा की जा सकती है जैसा कि किहोटो होलोहन वाद में स्पष्ट किया गया था। यह कानून संसद और राज्य विधानमंडल दोनों के सदस्यों पर लागू होता है। अतः विकल्प A सत्य है।

प्रश्न: 47

सही उत्तर: B

व्याख्या: अनुच्छेद 32 के तहत उच्चतम न्यायालय रिट जारी कर सकता है, और संसद विधि द्वारा यह शक्ति अन्य न्यायालयों (जैसे उच्च न्यायालयों को अनुच्छेद 226 के तहत पहले से है) को भी दे सकती है। उच्चतम न्यायालय की रिट अधिकारिता केवल मूल अधिकारों के प्रवर्तन तक सीमित है, जबकि उच्च न्यायालयों की व्यापक है। आपातकाल के दौरान अनुच्छेद 20 और 21 को छोड़कर अन्य मूल अधिकार निलंबित हो सकते हैं। अतः विकल्प B सही है।

प्रश्न: 48

सही उत्तर: C

व्याख्या: भारत में जनहित याचिका (PIL) की शुरुआत न्यायमूर्ति पी.एन. भगवती और वी.आर. कृष्ण अय्यर ने की थी। इसके तहत पीड़ित व्यक्ति के अलावा कोई अन्य सामाजिक रूप से जागरूक व्यक्ति या संस्था भी अदालत में याचिका ला सकती है (पीड़ित का स्वयं उपस्थित होना अनिवार्य नहीं है)। न्यायिक सक्रियता विधायिका या कार्यपालिका की निष्क्रियता पर न्यायपालिका के हस्तक्षेप को दर्शाती है। अतः कथन I और III सत्य हैं।

प्रश्न: 49

सही उत्तर: D

व्याख्या: अभिकथन असत्य है क्योंकि उच्चतम न्यायालय अनुच्छेद 143 के तहत राष्ट्रपति द्वारा मांगे गए परामर्श पर राय देने के लिए कुछ मामलों (जैसे पूर्व-संविधान संधियों से जुड़े विवाद) में बाध्य हो भी सकता है और सामान्य मामलों में मना भी कर सकता है (सलाह देना बाध्यकारी नहीं है)। कारण सत्य है कि दी गई सलाह राष्ट्रपति पर बाध्यकारी नहीं होती। अतः अभिकथन असत्य और कारण सत्य है।

प्रश्न: 50

सही उत्तर: A

व्याख्या: केशवानंद भारती वाद (1973) ने आधारभूत संरचना का सिद्धांत दिया जिसके तहत संसद संविधान के प्रावधानों में संशोधन तो कर सकती है, किंतु उसके मूल ढांचे को नष्ट नहीं कर सकती। न्यायिक पुनरावलोकन की शक्ति देश के उच्च न्यायालयों (अनुच्छेद 226) और उच्चतम न्यायालय (अनुच्छेद 32) दोनों के पास है, केवल उच्चतम न्यायालय के पास नहीं। अतः केवल निष्कर्ष I सत्य है।

प्रश्न: 51

सही उत्तर: A

व्याख्या: केशवानंद भारती वाद संविधान की आधारभूत संरचना के सिद्धांत से संबंधित है। मिनर्वा मिल्स वाद न्यायिक समीक्षा और संसद की संशोधन शक्ति में संतुलन स्थापित करता है। गोलकनाथ वाद मूल अधिकारों में संशोधन से संबंधित संसद की शक्ति पर रोक लगाता है। एल. चंद्रकुमार वाद यह निर्धारित करता है कि न्यायिक पुनरावलोकन की शक्ति संविधान की एक मूल विशेषता है। सही सुमेलित विकल्प A है।

प्रश्न: 52

सही उत्तर: C

व्याख्या: उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश अपना त्यागपत्र प्रधानमंत्री को नहीं, बल्कि भारत के **राष्ट्रपति** को संबोधित करते हुए सौंपते हैं। अन्य सभी विकल्प सत्य हैं: न्यायाधीश को हटाने के लिए संसद के दोनों सदनों द्वारा विशेष बहुमत चाहिए, सेवानिवृत्ति आयु 65 वर्ष है, और महाभियोग प्रस्ताव के लिए लोकसभा के 100 सदस्यों के हस्ताक्षर अनिवार्य होते हैं। अतः विकल्प C असत्य होने के कारण सही उत्तर है।

प्रश्न: 53

सही उत्तर: C

व्याख्या: संसदीय विशेषाधिकारों के तहत सदस्यों को दीवानी मामलों में गिरफ्तारी से उन्मुक्ति मिलती है, किंतु यह उन्मुक्ति **आपराधिक मामलों** (Criminal Cases) और **निवारक नजरबंदी** (Preventive Detention) के मामलों में लागू नहीं होती है। सदस्य आपराधिक मामलों में गिरफ्तार किए जा सकते हैं। अन्य सभी कथन (संसद के भीतर भाषण की स्वतंत्रता और प्रकाशन का अधिकार) पूर्णतः सत्य हैं। अतः विकल्प C असत्य है।

प्रश्न: 54

सही उत्तर: A

व्याख्या: अनुच्छेद 136 के अंतर्गत विशेष अनुमति याचिका (SLP) उच्चतम न्यायालय की एक असाधारण और व्यापक शक्ति है जिसके तहत वह देश के किसी भी न्यायालय या अधिकरण के निर्णय के विरुद्ध अपील की अनुमति देने के लिए अपने विवेक का उपयोग कर सकता है। यह नागरिकों का मौलिक अधिकार नहीं है, बल्कि न्यायालय का विवेकीय क्षेत्राधिकार है। यह दीवानी और आपराधिक दोनों मामलों में लागू होता है। अतः विकल्प A सत्य है।

प्रश्न: 55

सही उत्तर: C

व्याख्या: सार्वजनिक उपक्रम समिति (CoPU) सरकारी कंपनियों के लेखाओं और प्रतिवेदनों की जांच करती है, अतः कथन I सत्य है। इस समिति में 22 सदस्य होते हैं (15 लोकसभा और 7 राज्यसभा), अतः कथन II असत्य है क्योंकि इसमें राज्यसभा का प्रतिनिधित्व होता है। उच्चतम न्यायालय का अपीलीय क्षेत्राधिकार संवैधानिक, दीवानी और आपराधिक मामलों से जुड़ा है, अतः कथन III सत्य है। इस प्रकार कथन I और III सत्य हैं।

प्रश्न: 56

सही उत्तर: C

व्याख्या: किहोटो होलोहन वाद (1992) में उच्चतम न्यायालय ने यह निर्णय दिया था कि पीठासीन अधिकारी का दल-बदल संबंधी निर्णय न्यायिक समीक्षा के दायरे में आता है। दूसरी ओर, दल-बदल कानून के तहत अयोग्यता का प्रावधान निर्वाचित सदस्यों के साथ-साथ **मनोनीत सदस्यों** पर भी लागू होता है (मनोनीत सदस्य शपथ लेने के 6 महीने के भीतर पार्टी बदल सकते हैं, बाद में नहीं)। अतः कथन सत्य है और कारण असत्य है।

प्रश्न: 57

सही उत्तर: A

व्याख्या: प्राक्कलन समिति प्रशासनिक सुधार और अर्थव्यवस्था में किफायत पर ध्यान देती है, वह नीतिगत मामलों की आलोचना या समीक्षा सीधे नहीं करती, बल्कि प्रशासकीय दक्षता जांचती है। लोक लेखा समिति का

अध्यक्ष हमेशा विपक्षी दल का सांसद होता है, न कि सत्ताधारी दल का, ताकि वित्तीय पारदर्शिता बनी रहे। अतः केवल निष्कर्ष I सत्य है और निष्कर्ष II असत्य है।

प्रश्न: 58

सही उत्तर: B

व्याख्या: मूल क्षेत्राधिकार अनुच्छेद 131 के अंतर्गत आता है। अपीलीय क्षेत्राधिकार अनुच्छेद 132, 133 और 134 से संबंधित है। परामर्शदात्री क्षेत्राधिकार अनुच्छेद 143 के तहत आता है। रिट क्षेत्राधिकार अनुच्छेद 32 के अंतर्गत उच्चतम न्यायालय को प्राप्त है। सही सुमेलित युग्म a-II, b-I, c-IV, d-III है, जो विकल्प B में दिया गया है।

प्रश्न: 59

सही उत्तर: B

व्याख्या: उच्चतम न्यायालय का न्यायाधीश बनने के लिए किसी व्यक्ति को उच्च न्यायालय में कम से कम 5 वर्ष तक न्यायाधीश के रूप में कार्य करना अनिवार्य नहीं है, बल्कि विकल्प यह है कि वह 5 वर्ष तक उच्च न्यायालय का न्यायाधीश रहा हो या 10 वर्ष तक उच्च न्यायालय का अधिवक्ता रहा हो या राष्ट्रपति की राय में एक प्रतिष्ठित विधिवेत्ता हो। अतः विकल्प B तथ्यात्मक रूप से अधूरा और असत्य है, जो सही उत्तर बनता है।

प्रश्न: 60

सही उत्तर: C

व्याख्या: उच्चतम न्यायालय एक अभिलेख न्यायालय है जिसका अर्थ है कि इसके निर्णय देश के अन्य सभी अधीनस्थ न्यायालयों के लिए पूर्व दृष्टांत (Precedents) के रूप में बाध्यकारी होते हैं और उनकी कानूनी प्रामाणिकता पर सवाल नहीं उठाया जा सकता। अभिलेख न्यायालय होने के बावजूद उच्चतम न्यायालय को अपने पूर्व निर्णयों की समीक्षा (Review) करने की शक्ति प्राप्त है। अतः विकल्प C इस प्रश्न का सबसे उपयुक्त और तार्किक उत्तर है।

प्रश्न: 61

सही उत्तर: B

व्याख्या: भारत निर्वाचन आयोग के मुख्य चुनाव आयुक्त को हटाने की प्रक्रिया उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश के समान होती है (महाभियोग जैसी प्रक्रिया)। अन्य चुनाव आयुक्तों को मुख्य चुनाव आयुक्त की सिफारिश पर ही राष्ट्रपति द्वारा हटाया जा सकता है ताकि आयोग की स्वतंत्रता बनी रहे। निर्वाचन आयोग संसद, राज्य विधानमंडलों और राष्ट्रपति-उपराष्ट्रपति के चुनाव कराता है, किंतु राज्यों की पंचायतों और नगर पालिकाओं के चुनाव राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा कराए जाते हैं। अतः कथन I और II सत्य हैं, तृतीय असत्य है।

प्रश्न: 62

सही उत्तर: D

व्याख्या: नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (CAG) को केंद्र के साथ-साथ राज्यों की संचित निधि से होने वाले खर्चों की लेखापरीक्षा करने का भी पूर्ण संवैधानिक अधिकार प्राप्त है, अतः अभिकथन A असत्य है। कारण R सत्य है कि सीएजी की रिपोर्ट की जांच संसद में सार्वजनिक लेखा समिति द्वारा की जाती है। इस प्रकार अभिकथन असत्य और कारण सत्य है, जो विकल्प D को सही बनाता है।

प्रश्न: 63

सही उत्तर: A

व्याख्या: नीति आयोग का गठन 1 जनवरी 2015 को कार्यकारी संकल्प द्वारा हुआ था। इसकी शासी परिषद में सभी राज्यों के मुख्यमंत्री और केंद्रशासित प्रदेशों के प्रशासक शामिल होते हैं, जिससे सहकारी संघवाद को बढ़ावा मिलता है। नीति आयोग को कोई वित्तीय आवंटन करने की शक्ति प्राप्त नहीं है, और न ही यह पंचवर्षीय योजनाएं बनाता है क्योंकि पंचवर्षीय योजनाओं का दौर समाप्त हो चुका है। अतः केवल निष्कर्ष I सत्य है।

प्रश्न: 64

सही उत्तर: A

व्याख्या: केंद्रीय सतर्कता आयोग (CVC) को वर्ष 2003 के अधिनियम द्वारा वैधानिक दर्जा मिला था। नीति आयोग का गठन वर्ष 2015 में कार्यकारी संकल्प से हुआ। भारत निर्वाचन आयोग की स्थापना वर्ष 1950 में अनुच्छेद 324 के तहत हुई थी। नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक पद का विकास औपनिवेशिक काल में हुआ था। सही सुमेलित विकल्प a-II, b-IV, c-I, d-III है, जो कूट A के अनुरूप है।

प्रश्न: 65

सही उत्तर: D

व्याख्या: लोकायुक्त संस्था की स्थापना सबसे पहले महाराष्ट्र राज्य ने 1971 में प्रशासनिक सुधार आयोग की अनुशंसा पर की थी, न कि लोकपाल ने। लोकपाल में अध्यक्ष सहित अधिकतम 8 सदस्य हो सकते हैं जिसमें 50% न्यायिक सदस्य होते हैं। सीवीसी संधानम समिति की सिफारिश पर 1964 में बनी थी। चयन समिति में प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष, नेता प्रतिपक्ष, सीजेआई या उनके नामित न्यायाधीश और प्रख्यात न्यायविद होते हैं। अतः विकल्प D असत्य होने के कारण सही उत्तर है।

प्रश्न: 66

सही उत्तर: A

व्याख्या: नीति आयोग 'टीम इंडिया हब' के माध्यम से केंद्र और राज्यों के बीच एक सेतु का कार्य करता है ताकि राष्ट्रीय विकास के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। नीति आयोग के पास वित्तीय आवंटन की कोई शक्ति नहीं है (यह कार्य पहले योजना आयोग के पास था)। शासी परिषद की अध्यक्षता प्रधानमंत्री करते हैं, राष्ट्रपति नहीं। इसके सदस्यों का चयन जनता द्वारा नहीं होता। अतः विकल्प A इस प्रश्न का सबसे उपयुक्त उत्तर है।

प्रश्न: 67

सही उत्तर: B

व्याख्या: सीएजी का कार्यकाल 6 वर्ष या 65 वर्ष की आयु, जो भी पहले हो, तक होता है। सीएजी सेवानिवृत्ति के पश्चात भारत या किसी राज्य सरकार के अधीन किसी भी अन्य पद को धारण करने के योग्य नहीं होता है (अतः विकल्प A भी सत्य हो सकता है, किंतु प्रश्न में विकल्पों के तार्किक विश्लेषण के अनुसार कार्यकाल वाला तथ्य मानक है)। राष्ट्रपति द्वारा सीएजी की नियुक्ति की जाती है, और उसे हटाने की प्रक्रिया सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश जैसी होती है।

प्रश्न: 68

सही उत्तर: D

व्याख्या: केंद्रीय सतर्कता आयोग एक बहु-सदस्यीय निकाय है जिसमें एक केंद्रीय सतर्कता आयुक्त और अधिकतम दो सतर्कता आयुक्त होते हैं, अतः कथन I सत्य है। सीवीसी के सदस्यों का कार्यकाल 4 वर्ष या 65 वर्ष की आयु तक होता है, न कि 5 वर्ष, अतः कथन II असत्य है। लोकपाल के आने से सीवीसी समाप्त नहीं हुई है, बल्कि दोनों मिलकर भ्रष्टाचार निवारण में कार्य करते हैं। अतः केवल कथन I सत्य है।

प्रश्न: 69

सही उत्तर: C

व्याख्या: भारत निर्वाचन आयोग देश में चुनाव कराता है, किंतु निर्वाचन क्षेत्रों का परिसीमन करने का अधिकार संसद द्वारा गठित एक स्वतंत्र 'परिसीमन आयोग' के पास होता है, निर्वाचन आयोग सीधे परिसीमन नहीं करता। अतः अभिकथन A सत्य है और कारण R असत्य है क्योंकि निर्वाचन आयोग अपनी इच्छा से परिसीमन नहीं कर सकता जब तक विधिवत परिसीमन आयोग का गठन न हो।

प्रश्न: 70

सही उत्तर: A

व्याख्या: लोकपाल अधिनियम 2013 के अंतर्गत लोकपाल के अधिकार क्षेत्र में प्रधानमंत्री (कुछ विशेष प्रतिबंधों के साथ), मंत्री, सांसद और सभी श्रेणी के केंद्रीय अधिकारी आते हैं, अतः निष्कर्ष I सत्य है। लोकायुक्त की

स्थापना राज्यों के लिए स्वैच्छिक जरूर है, किंतु कई राज्यों (जैसे महाराष्ट्र, राजस्थान आदि) ने बहुत पहले ही लोकायुक्त अधिनियम पारित कर रखे हैं, अतः निष्कर्ष II असत्य है। इस प्रकार केवल निष्कर्ष I सत्य है।

प्रश्न: 71

सही उत्तर: A

व्याख्या: भारत निर्वाचन आयोग संविधान के अनुच्छेद 324 के अंतर्गत आता है। नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक अनुच्छेद 148 के अंतर्गत आता है। केंद्रीय सतर्कता आयोग वर्ष 2003 के अधिनियम द्वारा वैधानिक बना। लोकपाल संस्थान वर्ष 2013 के अधिनियम से स्थापित हुई। सही सुमेलित क्रम a-II, b-IV, c-III, d-I है, जो विकल्प A में स्पष्ट रूप से दिया गया है।

प्रश्न: 72

सही उत्तर: A

व्याख्या: संविधान में निर्वाचन आयोग के अन्य सदस्यों या मुख्य चुनाव आयुक्त का कार्यकाल निश्चित रूप से 6 वर्ष या 65 वर्ष का संविधान में मूल रूप से नहीं लिखा गया था, बल्कि यह संसद द्वारा बनाए गए अधिनियम (Representation of the People Act / Election Commission Act) द्वारा निर्धारित किया गया है, हालांकि परंपरा यही है। अन्य सभी विकल्प संवैधानिक और तथ्यात्मक रूप से पूर्णतः सत्य हैं। अतः विकल्प A असत्य होने के कारण सही उत्तर है।

प्रश्न: 73

सही उत्तर: D

व्याख्या: केंद्रीय सतर्कता आयोग (CVC) स्वयं अपने जासूसों से सीधी जांच नहीं कराता है, बल्कि भ्रष्टाचार के मामलों की जांच के लिए वह केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (CBI) या मंत्रालयों के मुख्य सतर्कता अधिकारियों (CVO) की सहायता लेता है। सीवीसी की स्थापना 1964 में संथानम समिति की सिफारिश पर गृह मंत्रालय के प्रस्ताव से हुई थी। इसे 2003 में वैधानिक दर्जा मिला। अतः विकल्प D असत्य होने के कारण सही उत्तर है।

प्रश्न: 74

सही उत्तर: A

व्याख्या: लोकपाल के चयन के लिए बनाई जाने वाली चयन समिति में प्रधानमंत्री अध्यक्ष होते हैं, और लोकसभा में विपक्ष के नेता इसके सदस्य होते हैं। इसके अलावा लोकसभा अध्यक्ष और भारत के मुख्य न्यायाधीश या उनके नामित सदस्य भी इसमें शामिल होते हैं। अन्य सभी विकल्प तथ्यात्मक रूप से गलत हैं क्योंकि चयन समिति में राष्ट्रपति का स्वविवेक या राज्यों के मुख्यमंत्रियों का होना अनिवार्य नहीं है। अतः विकल्प A सत्य है।

प्रश्न: 75

सही उत्तर: A

व्याख्या: नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (CAG) केंद्र सरकार के खातों से संबंधित अपनी रिपोर्ट राष्ट्रपति को सौंपता है, जिसे राष्ट्रपति संसद के दोनों सदनों के समक्ष रखवाते हैं, अतः कथन I सत्य है। सीएजी राज्यों के खातों की रिपोर्ट **राज्यपाल** को सौंपता है, न कि संसद को, अतः कथन II असत्य है। नीति आयोग एक कार्यकारी निकाय है, संविधिक निकाय नहीं, अतः कथन III असत्य है। इस प्रकार केवल कथन I सत्य है।

प्रश्न: 76

सही उत्तर: C

व्याख्या: भारत निर्वाचन आयोग के पास अपनी कोई स्थायी विशाल प्रशासनिक मशीनरी नहीं होती है, वह चुनावों के दौरान राज्य और केंद्र के प्रशासनिक कर्मचारियों की सेवाएं लेता है, अतः अभिकथन A सत्य है। कारण R असत्य है क्योंकि मुख्य चुनाव आयुक्त को हटाने की प्रक्रिया बेहद जटिल और संसद के विशेष बहुमत पर आधारित है, उसे राष्ट्रपति बिना किसी प्रक्रिया के सीधे नहीं हटा सकता।

प्रश्न: 77

सही उत्तर: A

व्याख्या: नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (CAG) को 'पब्लिक पर्स' (लोक वित्त) का प्रहरी कहा जाता है और यह मुख्य रूप से खर्च हो जाने के बाद उसकी वित्तीय अनियमितताओं की जांच करता है, जिसे 'पोस्ट-मॉर्टम ऑडिट' कहा जाता है, अतः निष्कर्ष I सत्य है। सीएजी सरकारी कंपनियों और सार्वजनिक उपक्रमों की लेखापरीक्षा भी करता है, अतः निष्कर्ष II असत्य है। इस प्रकार केवल निष्कर्ष I सत्य है।

प्रश्न: 78

सही उत्तर: A

व्याख्या: मुख्य चुनाव आयुक्त (a) को राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किया जाता है और उसे संसद के प्रस्ताव के माध्यम से ही हटाया जा सकता है (IV)। केंद्रीय सतर्कता आयुक्त (b) प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली समिति की संस्तुति पर राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त होता है (I)। लोकपाल अध्यक्ष (c) उच्चतम न्यायालय के मानदंडों के अनुरूप नियुक्त होता है (II)। नीति आयोग के उपाध्यक्ष (d) प्रधानमंत्री द्वारा नियुक्त किए जाते हैं (III)। सही सुमेलित विकल्प A है।

प्रश्न: 79

सही उत्तर: C

व्याख्या: भारत निर्वाचन आयोग मूल रूप से 1950 में एक-सदस्यीय निकाय था। इसे पहली बार 1989 में बहु-सदस्यीय बनाया गया था, और फिर कुछ समय के लिए एक-सदस्यीय करने के बाद 1993 से यह निरंतर बहु-सदस्यीय निकाय के रूप में कार्य कर रहा है, अतः वर्ष 1950 से ही निरंतर बहु-सदस्यीय होना असत्य है। अन्य सभी विकल्प नीति आयोग, सीवीसी और लोकपाल के संबंध में पूर्णतः सत्य हैं। अतः विकल्प C सही उत्तर है।

प्रश्न: 80

सही उत्तर: A

व्याख्या: लोकपाल अधिनियम 2013 के तहत लोकपाल के पास यह शक्ति है कि वह भ्रष्टाचार के मामलों में प्रारंभिक जांच या अन्वेषण के लिए केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (CBI) या अन्य जांच एजेंसियों को निर्देश दे सके, और सीबीआई अपनी रिपोर्ट सीधे लोकपाल को सौंपती है। लोकपाल किसी मुख्यमंत्री को बर्खास्त नहीं कर सकता, और इसके निर्णयों की न्यायिक समीक्षा हो सकती है। अतः विकल्प A सबसे तार्किक और सही उत्तर है।

प्रश्न: 81

सही उत्तर: B

व्याख्या: केंद्रीय सूचना आयोग (CIC) एक संविधिक (Statutory) निकाय है, न कि संवैधानिक, क्योंकि इसका गठन सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के प्रावधानों के अंतर्गत हुआ है, अतः कथन I असत्य है। मुख्य सूचना आयुक्त और अन्य आयुक्तों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली समिति (जिसमें लोकसभा में विपक्ष का नेता और एक कैबिनेट मंत्री होते हैं) की संस्तुति पर होती है, अतः कथन II सत्य है। 2019 के संशोधन ने कार्यकाल को बदल दिया है, अतः कथन III भी सत्य है।

प्रश्न: 82

सही उत्तर: C

व्याख्या: राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष के रूप में भारत के सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश या उच्चतम न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश नियुक्त हो सकते हैं (2019 संशोधन के बाद उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भी पात्र हैं), अतः अभिकथन A सत्य है। कारण R असत्य है क्योंकि 2019 के संशोधन के तहत अध्यक्ष और सदस्यों का कार्यकाल 5 वर्ष से घटाकर 3 वर्ष जरूर किया गया है, किंतु उन्हें पुनर्नियुक्ति का पात्र भी बनाया गया है। इस प्रकार अभिकथन सत्य और कारण असत्य है।

प्रश्न: 83

सही उत्तर: C

व्याख्या: भारतीय संविधान के अनुच्छेद 1 में भारत को राज्यों का संघ कहा गया है। चूंकि यह राज्यों के बीच किसी समझौते का परिणाम नहीं है, इसलिए किसी भी राज्य को संघ से अलग होने का अधिकार नहीं है।

(अविभाज्य राज्यों का विनाशी संघ)। प्रसिद्ध राजनीतिशास्त्री के.सी. व्हीयर ने इसकी अनूठी प्रकृति को देखते हुए इसे 'अर्द्ध-संघीय' कहा है। अतः दोनों निष्कर्ष पूर्णतः सत्य हैं।

प्रश्न: 84

सही उत्तर: A

व्याख्या: अनुच्छेद 262 अंतर-राज्यीय जल विवादों के न्यायनिर्णयन से संबंधित है (a-II)। अनुच्छेद 263 अंतर-राज्य परिषद की स्थापना का प्रावधान करता है (b-III)। अनुच्छेद 245 संसद और राज्य विधानसभाओं की विधायी शक्तियों के क्षेत्रीय विस्तार से जुड़ा है (c-I)। अनुच्छेद 249 राष्ट्रीय हित में राज्य सूची के विषय पर कानून बनाने की संसद की शक्ति को रेखांकित करता है (d-IV)। सही सुमेलित विकल्प A है।

प्रश्न: 85

सही उत्तर: B

व्याख्या: अंतर-राज्यीय जल विवाद अधिनियम 1956 के तहत संसद को अंतर-राज्यीय नदियों के पानी के प्रयोग, वितरण और नियंत्रण पर न्यायनिर्णयन के लिए विशेष अधिकार दिए गए हैं, अतः विकल्प B सत्य है। समवर्ती सूची के मामलों में यदि केंद्रीय और राज्य कानून में टकराव हो तो केंद्रीय कानून को प्राथमिकता मिलती है, न कि राज्य को (अनुच्छेद 254)। प्रशासनिक और वित्तीय संबंधों से जुड़े अन्य प्रावधान भी संविधान में स्पष्ट रूप से उल्लिखित हैं।

प्रश्न: 86

सही उत्तर: A

व्याख्या: वर्ष 1989 के बाद गठबंधन सरकारों के दौर ने क्षेत्रीय दलों को राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका दी, जिससे भारतीय संघवाद अधिक सहभागी और क्षेत्रीय रूप से संतुलित बना। गठबंधन सरकारों के कारण राज्यों की स्वायत्तता की मांग और अधिक मुखर हुई है। राष्ट्रीय एकता परिषद (NIC) गठबंधन सरकारों को रोकने के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकीकरण और सांप्रदायिक सौहार्द को बढ़ावा देने वाला एक उच्च-स्तरीय मंच है। अतः विकल्प A सर्वाधिक तार्किक है।

प्रश्न: 87

सही उत्तर: A

व्याख्या: राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष और सदस्यों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा छह सदस्यीय समिति (जिसमें प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष, गृह मंत्री, विपक्ष के नेता आदि होते हैं) की संस्तुति पर की जाती है, अतः कथन I सत्य है। मानवाधिकार आयोग के पास केवल 'अन्वेषण और सिफारिश' करने की शक्ति होती है, वह सीधे तौर पर किसी को सजा, कारावास या आर्थिक दंड नहीं दे सकता, अतः कथन II असत्य है। मानवाधिकार विशेषज्ञों का होना अनिवार्य है, अतः कथन III सत्य है।

प्रश्न: 88

सही उत्तर: B

व्याख्या: सरकारिया आयोग (1983) ने अपनी रिपोर्ट में सिफारिश की थी कि राज्यपाल के पद पर राज्य के बाहर के और सक्रिय राजनीति से दूर रहने वाले तटस्थ व्यक्ति की नियुक्ति की जानी चाहिए, ताकि निष्पक्षता बनी रहे, अतः अभिकथन A सत्य है। कारण R भी सत्य है कि राज्यपाल राष्ट्रपति के प्रसादपर्यंत पद धारण करता है और उसकी नियुक्ति केंद्र द्वारा होती है, जिससे राजनीतिक मतभेद उत्पन्न होते हैं। परंतु कारण, अभिकथन की प्रत्यक्ष परिभाषा या व्याख्या नहीं करता, इसलिए विकल्प B सही है।

प्रश्न: 89

सही उत्तर: B

व्याख्या: क्षेत्रीय परिषदें संविधिक (Statutory) निकाय हैं जिनका गठन राज्य पुनर्गठन अधिनियम 1956 के तहत हुआ है, न कि संवैधानिक निकाय (अनुच्छेद 263 के तहत अंतर-राज्य परिषद आती है, क्षेत्रीय परिषदें नहीं), अतः निष्कर्ष I असत्य है। देश में कुल पांच क्षेत्रीय परिषदें (उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी, पश्चिमी और मध्यवर्ती) हैं, और केंद्रीय गृह मंत्री इनके पदेन अध्यक्ष होते हैं, अतः निष्कर्ष II सत्य है।

प्रश्न: 90

सही उत्तर: A

व्याख्या: सरकारिया आयोग का गठन वर्ष 1983 में हुआ था (a-II)। मदन मोहन पंछी आयोग का गठन वर्ष 2007 में हुआ था (b-I)। प्रशासनिक सुधार आयोग का गठन वर्ष 1966 में हुआ था (c-IV)। राष्ट्रीय एकता परिषद की पहली बैठक वर्ष 1962 में हुई थी, और इसका गठन व्यापक रूप से 1961 के सम्मेलनों के बाद हुआ (d-III)। सही सुमेलित विकल्प a-II, b-I, c-IV, d-III यानी विकल्प A है।

प्रश्न: 91

सही उत्तर: D

व्याख्या: मदन मोहन पंछी आयोग (2007) का संबंध मुख्य रूप से केंद्र-राज्य संबंधों की समीक्षा से था, न कि चुनाव सुधारों या निर्वाचन आयोग की शक्तियों से, अतः कथन D तथ्यात्मक रूप से असत्य होने के कारण सही उत्तर बनता है। अन्य सभी विकल्प (CIC का कार्यकाल, NHRC की योग्यताएं, और अंतर-राज्य परिषद का अनुच्छेद 263 के तहत गठन) संवैधानिक और कानूनी रूप से पूर्णतः सत्य हैं।

प्रश्न: 92

सही उत्तर: C

व्याख्या: संविधान की सातवीं अनुसूची की **समवर्ती सूची में कर (Taxation) लगाने के विषय शामिल नहीं हैं**; कर लगाने की शक्ति या तो संघ सूची में है या राज्य सूची में (अवशिष्ट शक्तियां भी संघ के पास हैं)। समवर्ती सूची में केवल शुल्क और विधायी प्रक्रिया से जुड़े विषय हैं, कर लगाने के विषय समवर्ती सूची का हिस्सा नहीं हैं। अतः विकल्प C असत्य है और यही इस प्रश्न का सही उत्तर है।

प्रश्न: 93

सही उत्तर: A

व्याख्या: सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के तहत यदि कोई लोक सूचना अधिकारी (PIO) बिना किसी उचित कारण के सूचना देने से मना करता है, विलंब करता है, या गलत जानकारी देता है, तो केंद्रीय या राज्य सूचना आयोग को यह शक्ति प्राप्त है कि वह उस अधिकारी पर प्रतिदिन के हिसाब से आर्थिक दंड (पेनल्टी) लगाए और साथ ही उसके विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई की सिफारिश करे। आयोग सीधे जेल भेजने का दंडात्मक न्यायिक आदेश नहीं दे सकता। अतः विकल्प A सत्य है।

प्रश्न: 94

सही उत्तर: A

व्याख्या: राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग अपनी रिपोर्ट केंद्र सरकार को सौंपता है, जिसे संसद के समक्ष रखा जाता है (अतः कथन I सत्य है)। यदि मामला राज्य सूची के किसी विषय से जुड़ा है या राज्य मानवाधिकार आयोग वहां सक्रिय है, तब भी राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग को मामलों की जांच करने का अधिकार है, वह पूरी तरह वर्जित नहीं है (अतः कथन II असत्य है)। मानवाधिकार न्यायालयों की स्थापना जिला स्तर पर अधिनियम के तहत की जा सकती है (अतः कथन III सत्य है)।

प्रश्न: 95

सही उत्तर: C

व्याख्या: पंछी आयोग (2007) ने यह सिफारिश की थी कि राज्यपालों की नियुक्ति में राज्यों के मुख्यमंत्रियों से परामर्श की परंपरा को वैधानिक रूप से मजबूत किया जाना चाहिए ताकि विश्वास कायम हो, अतः अभिकथन A सत्य है। कारण R असत्य है क्योंकि पंछी आयोग ने राज्यपाल की भूमिका को अधिक निष्पक्ष और गैर-राजनीतिक बनाने पर जोर दिया था, न कि उसे अधिक पक्षपातपूर्ण बनाने के लिए। इस प्रकार अभिकथन सत्य और कारण असत्य है।

प्रश्न: 96

सही उत्तर: C

व्याख्या: समवर्ती सूची के विषयों पर केंद्र और राज्य के कानूनों में टकराव होने पर केंद्रीय कानून मान्य होता है, बशर्ते राज्य के कानून को राष्ट्रपति की पूर्व स्वीकृति मिली हो (अनुच्छेद 254), अतः निष्कर्ष I सत्य है। राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान संसद को राज्य सूची पर कानून बनाने का अधिकार मिलता है और आपातकाल हटने के छह महीने बाद वे कानून अप्रभावी हो जाते हैं, अतः निष्कर्ष II भी सत्य है।

प्रश्न: 97

सही उत्तर: A

व्याख्या: अंतर-राज्य परिषद एक संवैधानिक निकाय है जिसका प्रावधान संविधान के अनुच्छेद 263 में है (a-II)। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग एक वैधानिक या संविधिक निकाय है (b-I)। केंद्रीय सूचना आयोग भी सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के तहत एक संविधिक निकाय है (c-III)। राष्ट्रीय एकता परिषद एक गैर-संवैधानिक और गैर-संविधिक राजनीतिक मंच है (d-IV)। सही सुमेलित विकल्प a-II, b-I, c-III, d-IV यानी विकल्प A है।

प्रश्न: 98

सही उत्तर: B

व्याख्या: संविधान के अनुच्छेद 262 के अंतर्गत संसद द्वारा बनाए गए अंतर-राज्यीय जल विवाद अधिनियम के तहत गठित न्यायाधिकरण (Tribunals) के फैसलों के खिलाफ देश के किसी भी न्यायालय (उच्चतम न्यायालय सहित) की अधिकारिता को **बहिष्कृत (Barred)** कर दिया गया है, अर्थात् न्यायाधिकरण का निर्णय अंतिम होता है, उस पर साधारण अपील नहीं की जा सकती। अतः विकल्प B असत्य है और यही इस प्रश्न का सही उत्तर है।

प्रश्न: 99

सही उत्तर: B

व्याख्या: राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग मानवाधिकार हनन के मामलों की जांच कर सकता है, बशर्ते घटना को एक वर्ष से अधिक समय न हुआ हो (एक वर्ष से पुराने मामलों की जांच नहीं कर सकता, अतः विकल्प A गलत है)। आयोग सरकार से रिपोर्ट मांगता है और सरकार द्वारा संतोषजनक कार्रवाई न होने पर वह अपनी संस्तुति राष्ट्रपति या राज्यपाल को भेज सकता है, अतः विकल्प B सत्य है। आयोग के पास दंडात्मक कार्यकारी शक्ति नहीं होती, और यह सभी व्यक्तियों के मानवाधिकारों की रक्षा करता है।

प्रश्न: 100

सही उत्तर: B

व्याख्या: सरकारिया आयोग (1983) और पुंछी आयोग (2007) दोनों ने अपनी रिपोर्टों में अनुच्छेद 356 (राष्ट्रपति शासन) के दुरुपयोग पर गहरी चिंता व्यक्त की थी और यह सिफारिश की थी कि इसका प्रयोग केवल अंतिम विकल्प के रूप में ही किया जाना चाहिए। दोनों आयोगों ने राज्यपाल के पद को समाप्त करने की बात नहीं की, बल्कि उसकी निष्पक्षता बढ़ाने पर जोर दिया। अतः विकल्प B इस प्रश्न का सबसे उपयुक्त और तथ्यात्मक रूप से सही उत्तर है।

wincompete